ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -1| Jan - Jun, 2025

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व-समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 508-514

भारतीय ज्ञान परम्परा : वैदिक शिक्षा व्यवस्था की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता का अध्ययन

कविता देवी
हिन्दी व संस्कृत अध्यापिका
ब्रह्म दत्त ब्लू बैल्स पब्लिक स्कूल, गुरुग्राम, हरियाणा
ईमेल : kavita.devi@bluebells.org

सारांश

हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केन्द्रित करने के अतिरिक्त जीवन मूल्यों पर भी उतना ही ध्यान दिया था। एनईपी २०२० ने भी न केवल प्राचीन भारत के गौरवशाली अतीत को मान्यता दी है बल्कि प्राचीन भारत के विद्वानों चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, मैत्रयी, गार्गी आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान पाठ्यक्रम में प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक शामिल किया है। बदलते सामाजिक परिवेश और भारतीय मूल्यों के बीच हमारी शिक्षा को समावेशी बनाना अत्यन्त आवश्यक है। यह समावेशी व्यवस्था भारतीय ज्ञान परम्परा को लिए बिना नहीं चल सकती क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता के दौर में सरपट भागे जा रहे हैं तो दूसरी ओर हमारी संस्कृति में निहित ज्ञान परम्परा को भूलते जा रहे हैं। जैसा कि हमारे उपनिषदों में कहा गया है कि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला यदि दृष्टिहीन हो तो वह लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। बदलते शिक्षा के परिवेश और प्राचीन ज्ञान परम्परा के तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण हेतु यह विषय चुना गया है ताकि अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में हुए बदलावों और आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जा सके। शिक्षण और शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें निरन्तर बदलावों की आवश्यकता होती है क्योंकि जिस प्रकार एक जगह एकत्रित हुआ जल दूषित हो जाता है और पीने लायक नहीं रहता ठीक उसी प्रकार यदि समाज के आधार स्तंभ शिक्षा यदि दूषित होने से बचाना है तो समय के साथ बदलाव निरन्तर आवश्यक है। वस्तुतः शिक्षा वह माध्यम है जो समाज को आदर्श चिंतन और आदर्श कर्म करने की ओर अग्रसर करती है। एक शिक्षित मनुष्य ही एक शिक्षित समाज का निर्माण करता है इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में आए परिवर्तनों का जानना आवश्यक बन जाता है।

कुंजी शब्द– भारतीय ज्ञान परम्परा, वैदिक शिक्षा व्यवस्था, आधुनिक शिक्षा प्रणाली

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परम्परा एक बहुत ही विशाल और गहन धारणा है जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति के आधारभूत सिद्धांतों, गणित, विज्ञान, धर्म, दर्शन, कला, साहित्य और दर्शन जैसे विभिन्न क्षेत्रों को समाहित करती है। यह परम्परा बहुत प्राचीन है और भारतीय जीवन और विचारधारा को बहुत ही गहराई से प्रभावित करती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा का मौलिक उद्देश्य विज्ञान, धार्मिक तत्व, सामाजिक सम्बन्ध और आत्म अन्वेषण की ओर

मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं की समझ उत्पन्न करना है। भारतीय ज्ञान परम्परा ध्यान और मानव के आत्मबल की महता को भी प्रोत्साहित करती है। भारतीय ज्ञान परम्परा में गुरु शिष्य परंपरा, श्रुति और स्मृति शास्त्रों का महत्व और ध्यान की प्रथा जैसे महत्वपूर्ण तत्व शामिल है। इस परम्परा के अनुसार ज्ञान का अध्ययन और प्राप्ति एक साधन है जो जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति में मदद करता है। भारतीय ज्ञान परम्परा अत्यन्त विविध है और इसमें अनेक स्तरों पर विभिन्न धार्मिक, दार्शनिक और साहित्यिक तत्वों का संग्रह है। यह एक समृद्ध और आध्यात्मिक परम्परा है जो समय के साथ विकसित हुई है और आज भी भारतीय परंपरा की सोच को प्रभावित करती है।

शिक्षा में क्षेत्र में भी भारतीय ज्ञान परम्परा का अत्यधिक महत्व है। यह हमारी संस्कृति ,तत्व और विरासत के प्रति संवेदनशीलता के साथ अपने अद्वितीय विचारों और धारणाओं को समझने में सहायता प्रदान करती है। यह शिक्षा को मूल्यांकन की दिशा में भी गतिशीलता प्रदान करती है जिससे छात्रों को न केवल अपनी विशेष रुप से व्यक्तिगतता को विकसित करने की अनुमति मिलती है बल्कि उन्हें अपने परम्परागत गुणों और मूल्यों को समझने का भी अवसर प्राप्त होता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा शिक्षा में उन्नति को बढ़ावा देती है जो छात्रों को समाज में सक्रिय और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए आवश्यक है। यह छात्रों को आदिवासीय , धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं को समझने और समर्थन करने की क्षमता प्रदान करता है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा को वैदिक कालीन शिक्षा के नाम से भी जाना जाता है। वैदिक साहित्य में ज्ञान, दर्शन , प्रबोध इत्यादि शब्दों से शिक्षा को परिभाषित किया है। प्राचीन भारतीय शैक्षिक चिन्तन मानवीय मूल्यों को केन्द्र बिन्दु के रुप में ग्रहण किया है। शिक्षा के प्रति भारतीय दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक रहा है। वैदिक काल में शिक्षा को मोक्ष का आधार भी माना गया है। इसके लिए भारतीय शैक्षिक परम्परा में आश्रम व्यवस्था की अनिवार्यता भी सुनिश्चित की गई थी। भारतीय ऋषियों द्वारा प्रतिपादित प्रथम आश्रम "ब्रह्मचर्य आश्रम" भी शिक्षा पर ही समर्पित है। विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे । आचार्य को गुरु की संज्ञा दी जाती थी और छात्र को अंतेवासी ब्रह्मचारी कहा जाता था। गुरु–शिष्य परम्परा हिंदू धर्म में ही नहीं अपितु जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म का भी अभिन्न अंग थी।

गुरु शिष्य से अध्यापन का कोई शुल्क प्राप्त नहीं करते थे। यह शिक्षा पूर्णतया निशुल्क थी। छात्र गुरु से ज्ञान प्राप्त करते थे और दिनचर्या के कार्यों में गुरु की सहायता करते थे। गुरु विद्यार्थियों को दर्शन, साहित्य व्याकरण की शिक्षा के साथ –साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्रदान करते थे। वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण के, आत्मानुशासन और आध्यात्मिकता की ओर मोडना था। नैतिक मूल्य, चारित्रिक उत्थान, संस्कृति एवं परम्परा के तत्व इस शिक्षा पद्धति के प्रमुख गुण थे।

वैदिक काल में शिक्षा का स्वरुप

वैदिक काल में शिक्षा मात्र पुस्तकीय ज्ञान पर अधारित नहीं थी। शिक्षा का वैदिक युग में अर्थ बहुत ही व्यापक और विशाल था।व्यवहार में सार्थक परिवर्तन ही वैदिक काल में शिक्षा का प्रमुख आधार था। वास्तविक अर्थों में बच्चे की शिक्षा उसके जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया है। एक बच्चे की प्रथम गुरु उसकी माँ होती है और धीरे–धीरे औपचारिक शिक्षा को ग्रहण करता हुआ बालक संज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त करता है। वैदिक काल में भी बालक की शिक्षा की संपूर्ण भागीदारी परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व की थी क्योंकि शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात बालक को अपनी पूर्ण भागीदारी परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति निभानी भी पड़ती थी। क्योंकि प्राचीन काल में बालक के विकास में सभी घटकों और कारकों पर पूर्ण चिन्तन करने के पश्चात ही उस पर लागू किया जाता था तो हम यह मान सकते हैं कि प्राचीन भारतीय मनीषी दार्शनिक होने के साथ–साथ आदर्श शिक्षाशास्त्री भी थे। वे इस बात को भली–भाँति जानते थे कि एक बालक के सर्वांगीण

विकास के लिए शिक्षा से बढ़कर कोई अन्य साधन नहीं हो सकता। इस चिन्तन को ध्यान में रखकर एक सुसंगठित व सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली का उदय हुआ जिसे हम सभी वैदिक शिक्षा प्रणाली के रुप में जानते हैं। इस काल में शिक्षा न तो पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित थी और न ही जीविकोपार्जन मुख्य लक्ष्य था अपितु उस समय शिक्षा जीवन –दर्शन के निर्माण के लिए आधारभूत सिद्धान्त के रुप में जानी जाती थी।

भागवत पुराण के अनुसार

जब संसार अंधकार से उबरा तो जल में प्रारंभिक मूल प्रकृति से वनस्पति का बीज उत्पन्न हुआ, जिससे पौधों को जीवन मिला। पौधों से कीटाणु उत्पन्न हुए जो जीव अनुक्रम में कीडे, साँप, कछुआ, पक्षी, पशु आदि अवस्थाओं से होते हुए मानव रुप प्राप्त किए। पौधों व जीवों की उत्पति का यह विशुद्ध वैदिक ज्ञान है।"

ऋषि मनु के अनुसार

"सभी जीव अपनी पुरानी पीढियों के जीवित रहने की क्षमता को अपनाकर आगे बढते रहे।" सोलहवीं सदी के वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने इसे 'डार्विन विकासवाद' प्रणाली का नाम दिया। ज्यामिति के कई महत्त्वपूर्ण नियमों की खोज बोधायन द्वारा करना, शुन्य तथा दशमलव प्रणाली का जनक भारत का होना, पिंगलाचार्य के छंद नियमों का एक तरह से द्विअंकीय (बाइनरी) गणित का कार्य करना, महर्षि भारद्वाज का विमान शास्त्र, वेदांग, ज्योतिष में सूर्य, चन्द्रमा नक्षत्र, सौर मंडल के ग्रह और ग्रहण के विषय में जानकारी, भास्काराचार्य द्वारा सिद्धांतशिरोमणि ग्रन्थ में गुरुत्वाकर्षण का उल्लेख करना, शताब्दियों पूर्व नौवहन की कला का जन्म होना, भगवान् राम द्वारा यमुना पार करने के लिए नौका का प्रयोग करना, महर्षि कणाद द्वारा डाल्टन से पूर्व परमाणुवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन, वेदान्त दर्शन में पंचीकरण की प्रक्रिया द्वारा सृष्टि उत्पति का वैज्ञानिक विवेचन, अगस्त्य संहिता में आश्चर्यजनक रुप से विद्युत उत्पादन सम्बन्धी सूत्रों का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त प्राचीन वास्तुशास्त्र, प्राचीन कृषि विषयक ग्रन्थ जैसे–कृषि पाराशर, वृक्षायुर्वेद का भी वर्तमान आवश्यकताओं के अनुकूल शोधकार्य किया जाना चाहिए। सार रुप में यह कह सकते हैं कि याकोबी, विंटरनिट्स, मैक्समूलर, विलियम जोन्स, मोनियर विलियम्स, अलेक्जेंडर कनिंघम इत्यादि विदेशी विद्वानों ने भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया तथा नासा जैसे संस्थान हमारे ग्रन्थों व परम्पराओं का अध्ययन कर समृद्ध हो रहे हैं ।

वैदिक शिक्षा का उद्देश्य

वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी जीवन के प्रत्येक पहलू को छूना था। शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास ही नहीं करती थी अपितु सम्पूर्ण समाज का विकास का माध्यम थी। गुरु की चरित्र और आचरण विधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को चरित्र संरक्षण का प्रथम पाठ पढाया जाता था। विद्यार्थी का चरित्र निर्माण अनेक प्रकार से किया जाता था। शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत आध्यात्मिकता को ही बढाना नहीं अपितु प्रकृति द्वारा प्रदत्त सभी शक्तियों में वृद्धि करना था। गुरुकुल का लक्ष्य ही चरित्र निर्माण के माध्यम से राष्ट्र के लिए श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करना था ।

वैदिक काल में शिक्षा भी वाद–विवाद, प्रश्नोत्तर विधि, विचार–विमर्श इत्यादि के माध्यम से दी जाती थी और ये सभी गतिविधियाँ व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। गुरुकुलों में प्रतिदिन 'करके सीखना' गतिविधियों के माध्यम से शिष्यों का आत्मबल, आत्मविश्वास, न्याय, स्वाभिमान और समर्पण का भाव विकसित किया जाता था।

वैदिक शिक्षा में पाठ्यक्रम

वैदिक काल में पाठ्यक्रम का निर्माण दो प्रकार का होता था– आध्यात्मिक तथा वैश्विक पाठ्यक्रम। आध्यात्मिक

पाठ्यक्रम में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, वेदांग, उपनिषद, पुराण, दर्शन और न्यायशास्त्र सम्मिलित थे। वैश्विक शिक्षा में इतिहास, सांख्यिकी, नक्षत्र, भौतिकी, जैवशास्त्र, भू–विज्ञान, व्यापार, बीजगणित, सैन्यशिक्षा, रसायन विज्ञान, गणित, राजनीतिकशास्त्र, पशुपालन और कालों की शिक्षा सम्मिलित थी। सामान्य विषयों के साथ आध्यात्मिक और धार्मिक साहित्य तथा कला का ज्ञान अपेक्षित था।

वैदिक काल में अध्यापक की भूमिका

वैदिक काल में 'गुरु' की पद सबसे ऊँचा होता था। गुरु केवल अनुशासन और विद्यार्थियों के शिक्षण तक ही सीमित नहीं था अपितु वह पूरे समाज का दिशा–निर्देशन करता था। गुरु को समापवर्तन संस्कार के उपरान्त डिग्री देने का पूर्ण अधिकार था। वैदिक काल में अध्यापक प्रशिक्षण के विशेष प्रावधान नहीं थे। गुरु अपने अनुभव और शैक्षणिक ज्ञान से स्वयं अधिगम की ओर उन्मुख रहता था।प्राचीन भारतीय वैदिक शिक्षा प्रणाली सम्पूर्ण विश्व में सबसे श्रेष्ठ है। इसके शैक्षणिक सिद्धान्त समाज के लिए बहुत लाभदायी हैं। वैदिक शिक्षा का उद्देश्य ही मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन का उत्थान करना था। वैदिक काल के शिक्षा के उद्देश्य आज के वर्तमान शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए भी मार्गदर्शक हैं।

वैदिक शिक्षा व्यवस्था

वैदिक शिक्षा का भली–भांति अध्ययन करने पर हम यह देख पाते हैं कि प्राचीन भारतीय शिक्षा की कतिपय मौलिक विशेषताएँ हैं, जैसे कि– आध्यात्मिक उत्थान, चारित्रिक उत्थान, प्रकृति का सान्निध्य, धार्मिक चिन्तन, शैक्षिक संस्कार आदि। वैदिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में मुख्य रुप से दो विषय मुख्य रुप से समाहित हैं–परा और अपरा । परा विद्या आध्यात्मिक उत्थान और अपरा विद्या लौकिक ज्ञान के लिए थी।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली

आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने सम्पूर्ण विश्व में नई चेतना जागृत की है। संपूर्ण विश्व अंधकार युग से बाहर निकलकर प्रकाश की किरणों की ओर जा रहा है। कहते हैं सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा एक–दूसरे के पूरक रहे हैं। आधुनिक शिक्षा ने मनुष्य को आधुनिक भाव बोध प्रदान किया है, उन्हें अधिक से अधिक तार्किक बनाया है और वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान की है। इस तार्किक बुद्धि ने सामाजिक परिवेश में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया है। यह सब कुछ नए सिरे से सोचा जा रहा है, विचारा जा रहा है और प्रयोग में लाया जा रहा है। इस बात से हम विमुख नहीं हो सकते कि मनुष्य जाति को कम्प्यूटर और क्लोन तक लाने के लिए आधुनिक शिक्षा का बडा योगदान रहा है। अदम्य संघर्षों द्वारा ही प्राप्त प्रगति और विकास में आधुनिक शिक्षा ने कदम से कदम मिलाकर मानव संसार का साथ दिया है। आज अगर लोग में अंधविश्वास की भावना कम हुई है तो इसका मुख्य श्रेय आधुनिक शिक्षा पद्धति को ही जाता है। आधुनिक शिक्षा के माध्यम से तार्किकता और रचनात्मकता दोनों का विकास बहुत ही बडे स्तर पर हो रहा है। तार्किकता और रचनात्मकता विद्यार्थियों को सामाजिक, मानवीय, तकनीकी और व्यक्तिगत स्तर पर तैयार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। आधुनिक शिक्षा की कार्य पद्धति में अध्यापक की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। शिक्षकों का उद्दीपन, नेतृत्व और निरंतर समाधान विद्यार्थियों को स्वतंत्रता और संवेदनशीलता के साथ सीखने के लिए प्रेरित करता है। यह शिक्षा पद्धति छात्रों को सक्रिय भागीदारी, गहरी समझ और स्वाध्याय पर भी बल देती है। आधुनिक शिक्षा की सबसे बडी विशेषता यह है कि विद्यार्थियों को पके हुए स्वादिष्ट भोजन के स्वाद का आनन्द लेने की बजाय उस स्वादिष्ट व्यंजन की उत्पत्ति कैसे और किन प्रक्रियाओं से होकर व्यंजन स्वादिष्ट श्रेणी को प्राप्त हुआ है, यह समझाना भी है। आज की शिक्षा प्रणाली में अध्यापक का कार्य मात्र विद्यार्थियों को अधिगम में ज्यादा से ज्यादा भागीदारी लेना है और शोध के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करना है। नई शिक्षा प्रणाली की यह मान्यता है कि मनुष्य स्वयं करके जितना याद रखता है और सीखता है , उतना किसी के द्वारा बताए जाने पर नहीं ।

मनुष्य समाज में रहते हुए अनेक अनुभवों को अपने अधिगम का हिस्सा बनाता है। यह अधिगम जन्म के प्रारम्भ से लेकर जीवन के अंत तक स्वतः चलने वाली एक प्रक्रिया है। लेकिन औपचारिक अधिगम में समय, स्थान और विषय–वस्तुओं की उपलब्धताओं का होना निश्चित होता है। औपचारिक अधिगम की यह प्रक्रिया सभ्यता और संस्कृति का आधार है। समाज की धुरी शिक्षा के इर्द–गिर्द ही घूमती है। शिक्षा मनुष्य को सभ्य व सुसंस्कृत तो बनाती ही है, साथ ही साथ सोचने, समझने और तर्क के आधार पर भावाभिव्यक्ति करने की भी प्रगाढता प्रदान करती है। भारतीय षड् दर्शन में शिक्षा के अध्ययन–अध्यापन से सम्बन्धित अनेक उदाहरणों का उल्लेख मिलता है जो उस समय की शैक्षणिक परिपाटी से हमें परिचित कराती है। समय के साथ जहाँ मनुष्य के आचार–विचार, व्यवहार और क्रियाओं में अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते हैं वहीं शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तनों ने जगह ली है। गुरु–शिष्य परम्परा से शुरु हुई शिक्षा की आधारशिला, आज अध्यापक–छात्र परम्परा तक पहुँचते –पहुँचते अनेकों बार परिमार्जित और परिष्कृत हो चुकी है। आज के परिपेक्ष्य में अध्यापक एक व्याख्याता ही नहीं अपितु एक अनुदेशक भी है, जो केवल और केवल विद्यार्थी के सीखने को आसान बनाता है तथा अधिगम संघर्ष की स्थिति में उसे हाथ पकडकर रास्ता दिखाने वाला एक मार्गदर्शक है, जिसका मुख्य उद्देश्य "रटंत विद्या" से "करके सीखना" की ओर प्रस्थान करना है। इस शोध–पत्र के माध्यम से हम अध्ययन–अध्यापन के प्रति आए परिवर्तनों की आवश्यकता का हम जान सकेंगे।

शोध का उद्देश्य

इस शोध के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली का विश्लेषाणात्मक अध्ययन करना मूल उद्देश्य है ताकि भारतीय शिक्षा प्रणाली को समझ कर अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में उसकी उपयोगिताएँ, स्वीकार्यताएँ और अपेक्षाएँ, समझी जा सकें। भारतीय शिक्षण क्षेत्र न केवल विस्तृत है अपितु यह संवेदनाओं, संस्कारों और भविष्य की परिकल्पनाओं पर भी आधारित है। समय के साथ–साथ प्रावधानों और उद्देश्यों में बदलाव अवश्य आया है परन्तु सार्वभौमिक उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास ही है। शिक्षा के क्षेत्र में आया प्रत्येक बदलाव शिक्षक और छात्र के शिक्षण व अधिगम को कितना प्रभावित करता है तथा उस प्रभाव के कारण क्या हैं, यही इस लघु शोध प्रबन्ध का उद्देश्य है भारतीय ज्ञान परम्परा से शिक्षा के अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में कितने बदलाव आए हैं और उन बदलावों से सन्दर्भित विषय–वस्तु की गहराई की व्यापकता का कैसे अनुमान लगाया जा सकता है तथा इस शोध–पत्र की आवश्यकताएँ और अपेक्षाएँ क्या हैं?

1. वैदिक काल की तुलना में आधुनिक काल की शिक्षा में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
2. वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
3. वैदिक शिक्षण पद्धतियों का आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में प्रासंगिकता।

प्रमुख शब्द परिचालन

भारतीय ज्ञान परम्परा–"भारत" शब्द से यहाँ तात्पर्य अखण्ड भारत से है, ऐसा भारत जो विभाजन से पूर्व अपनी शैक्षणिक धरोहरों को समेटे हुए था। "ज्ञान" शब्द का अपर पर्याय अधिगम है। औपचारिक और अनौपचारिक रुप से जो कुछ भी बुद्धि ग्राह्य विषय बनता है, वह ज्ञान की श्रेणी में आता है। "परम्परा" शब्द रुढियों, रीतियों और व्यवस्थाओं से सम्बन्धित है।

वैदिक काल– वेदों से प्राप्त शिक्षा पद्धति जिसमें गुरुकुल परम्परा और आश्रम जनित संस्कारों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती थी। वैदिक शिक्षा का मूलाधार वेदों की ऋचाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षित किया जाता था

आधुनिक काल– वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। ये परिवर्तन आज के परिपेक्ष्य में शिक्षा से बालक की आवश्यकताओं और रुचियों को ध्यान में रखकर किए जा रहे हैं ताकि शिक्षा ग्रहण करने के

उद्देश्यों को आधार बनाकर फलागम भी उसी अनुरुप हो सके।

शिक्षा व्यवस्था–शिक्षा व्यवस्था से अभिप्राय ऐसी शैक्षिक प्रणाली से है जो पीढियों से चली आ रही शिक्षा सम्बन्धी प्रक्रियाओं से एक ऐसी अधिगम व्यवस्था का निर्माण कर सके जिससे विद्यार्थी का चहुँमुखी विकास हो सके और वह शिक्षा के माध्यम से वैश्वीकरण की दिशा में पदार्पण कर सके।

शोध प्रारुप एवं सूचना संग्रह

- इस शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत गुणात्मकता व गुणवत्ता दोनों प्रकार की रुपरेखाओं का प्रयोग किया है।
- सूचना संग्रह हेतु अन्तर्जाल तथा द्वितीयक स्त्रोतों की सहायता ली है।

शोध का क्षेत्र

इस लघु शोध प्रबन्ध का क्षेत्र वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक आए शिक्षण के बदलावों तथा समयानुरुप शिक्षण उद्देश्यों के नवीनीकरण , शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग, शिक्षण प्रक्रियाएँ तथा सीमाएँ और शिक्षण को वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक प्रभावित करने वाले कारक इस शोध पत्र का क्षेत्र हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

वैदिक काल से चली आ रही शिक्षण परम्पराओं से अध्ययन और अध्यापन की श्रृंखला के बदलावों को जानकर आज के परिपेक्ष्य में वें परिवर्तन कितने सार्थक हैं तथा एक उच्चकोटि के शिक्षण में उनका कितना महत्व है। इसके अतिरिक्त यदि उनमें किसी तरह के परिवर्तन की आज भी आवश्यकता है तो वें परिवर्तन क्या होंगे जो विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास हेतु कारगर सिद्ध हों। अब तक भारत में चार राष्ट्रीय शैक्षिक नीतियाँ आ चुकी हैं जिनका उद्देश्य मात्र शिक्षा के स्तर में निरन्तर सुधार करना और विद्यार्थियों को अधिकाधिक लाभान्वित करना है। १९६८ से लेकर २०२० तक शिक्षा की नीतियों में फेरबदल कर उनका परिष्कृत और परिमार्जित करना है ताकि भारत में शिक्षा की आधारशिला को दृढ़ बनाया जा सके।

अध्ययन का परिसीमन

कालानुरुप अध्ययन का परिसीमन क्षेत्र निम्नलिखित प्रकार से है

- वैदिक काल
- आधुनिक काल

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Education in ancient India
- The educational heritage of ancient India
- History of education in India by A.S. Altekar
- The Education system of India by Nishant Chaudhary
- Innovations in Indian education system
- (Dr. Chaturvedi Kamna(2024). INDIA NKONWLEDGE SYSTEM: Integration Internationalisation, Edited by Dr. Jugnu Khatter Bhatia, Dr. Reena Uniyal Tiwari, First Edition, RED'SHINE PUBLICATION (22).
- Dr. V. Tijare Ranjana (2024) - INDIAN KONWLEDGE SYSTEM, Integration & Internationalisation, Edited by Dr- Jugnu Khatter Bhatia] Dr- Reena Uniyal Tiwari, First Edition, RED'SHINE PUBLICATION (25, 26, 27).
- Mukerjee, S.N. (1955) "History of Education in India" Acharya Book Dept Baroda.

- Mukerjee, S.N. (1955) "History of Education in India" Acharya Book Dept Baroda.
- Balasubramanian, A.V. (2004) Traditional and Modern Sciences and technologies in India: trading new paradigms for old, Paper for the compass panel in the conference. Bridging Scales and Epistemologies. Linking Local Knowledge with Global Science in Multi & Scale Assessments, Alexandria March 2004.
- National Council of Education Research and Training (NCERT)
- Ms Chhabra Mahak & Pro. Rathore Mudit (2024). INDIAN KONWLEDGE SYSTEM: Integration & Internationalisation, Edited by Dr. Jugnu Khatter Bhatia, Dr. Reena Uniyal Tiwari, First Edition, RED'SHINE PUBLICATION (126, 126).
- Kapoor, K-Some reflection on the interpretation of texts in the Indian Tradition"- Structure of Significance, ed- H-S-Gill, Vol-1, Delhi: Wiley Eastern Limited. 1990.
- भारतीय ज्ञान परम्परा और शोध. जम्बूद्वीप—The E - Journal of Indic Studies (ISSN: 2583—6331), 2(1).